SHANTA - JODHPUR ☎ 2654321

आयुर्वेदिक औषधि के लिए वरदानः
अश्वगंधा "*विदानिया सोम्नीफेरा* डुनाल."

विशेषतायें एवं लाभः

- अश्वगंधा में विथेनिन और सोमनीफेरीन एल्कलाईड्स पाए जाते हैं।
- जिनका उपयोग आयुर्वेदिक तथा यूनानी दवाइयों के निर्माण में किया जाता है।
- आयुर्वेद में इसे गठिया के दर्द, जोडों की सूजन, पक्षाघात, रक्तचाप आदि जैसे जटिल रोगों के उपचार में किया जाता है। इसकी पत्तियॉ त्वचारोग, सूजन एवं घाव भरने में उपयोगी है।

कृषि तकनीकः

मृदाः

- रेतीली-दोमट अथवा हल्की लाल मिट्टी जिसका pH मान 7.5-8.0 के बीच हो और जल निकासी की उत्तम व्यवस्था हो, इसकी खेती के लिए अच्छी मानी गई है।

भूमि की तैयारीः

- अश्वगंधा को वर्षा आधारित फसल के रूप में बोया जाता है।
- खेत में 3-4 बार हल चलाकर, मिट्टी को ढ़ीली, खरपतवार मुक्त एवं समतल किया जाता है।
- सिंचाई की नालियों युक्त 6 x 4 मी. आकार की क्यारियां बनाई जाती हैं।
- आवश्यकता होने पर जैविक खाद, वर्मी कम्पोस्ट अथवा हरी खाद का उपयोग किया जा सकता है।

पौधरोपणः

- अगस्त-सितंबर में 10-12 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव विधि अथवा कतार बद्ध तरीके से बोया जाता है।
- अगर पौधों को नर्सरी में तैयार करके रोपा जाए तो सिर्फ 5 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता पड़ती है।
- बीज को बीमारी से बचाने के लिए थीरेम अथवा डाइथेन-एम 45 से उपचारित करना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रणः

- बिजाई के 25-30 दिन पश्चात् अनचाहे पौधों को इस प्रकार निकालना चाहिए कि पौधे से पौधे की दूरी 10 x 20 से.मी.. हो जाए।

सिंचाईः

- अश्वगंधा वर्षा आधारित फसल है, अतः इसे कम अथवा ना के बराबर सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है।
- आवश्यकता पड़ने पर हल्की सिंचाई करनी चाहिए।

कटाई व उपजः

- फसल बोने के 150-180 दिनों पश्चात् जनवरी-फरवरी माह में फसल को जड़ों सहित उखाड़ लिया जाता है।
- जड़ों को पौधे के उपरी भाग से प्रथक कर साफ करके धूप में सुखाया जाता है।
- फलों को सूखे पौधे से तोड़कर बीज निकाल लिए जाते हैं।

आयः

- अच्छी फसल से तकरीबन 6-7 कुन्तल सूखी जड़ तथा 50-60 किलो बीज प्रति हेक्टेयर प्राप्त होते हैं।
- जड़ का भाव तकरीबन 70-80 रूपये प्रति किलो एवं बीज 50 रूपये प्रति किलोग्राम की दर से बिकते हैं।

संकलनः
डॉ. डी.के. मिश्रा
वन संवर्धन प्रभाग

निदेशक
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान
कृषिमण्डी, नया पाली मार्ग, जोधपुर -342 005